# कला में आधुनिकता

**महेश सिंह**

MS Received October, 2013; Reviewed November, 2013; Accepted November, 2013

**सारांश**

आधुनिकता के प्रश्न बार – बार हमारे सामने खड़े होते हैं। आज के युवा कलाकारों को इन प्रश्नों को जानने, समझने के साथ – साथ गुणने की भी परम आवश्यकता है, ताकि भावी पीढ़ी को आधुनिकता के नाम पर भ्रम पैदा न हो। आधुनिक कला को समझने के लिए न केवल कला कार्य बल्कि साहित्य की गहराई को भी समझने की आवश्यकता है ताकि परम्परागत कला को समझकर आधुनिकता को पहचाना जा सके। जिससे युवा कलाकार पथ भ्रमित न हों और कला की साधना गहराई से कर सकें।

यह साधना ही है जो कला में आनन्द की अनुभूति प्रदान करती है, परन्तु आज का कलाकार भौतिकता के संसार में इस प्रकार गतिमान हो गया है कि उसको आत्मिक आनन्दानुभूति गौण महसूस होने लगी है और अगर ऐसी ही स्थिति बनी रही तो कला एक दिन सुप्तावस्था को प्राप्त होने लगेगी। अतः इस स्थिति से उबरने के लिए युवा कलाकार को आंशिक लाभ छोड़कर ''कला की साधना'' की आवश्यकता है ताकि कला की आधुनिकता को और अधिक गहराई से जाना व समझा जा सकें।

**मुख्य शब्दः** प्रासंगिकता, द्वन्दात्मक, समन्वयात्मक, निर्वाह, उद्वेग, भौतिकता, सुप्तावस्था

आज के समय ''आधुनिक समय'' ने कला, कलाकार और दर्शक इन तीनों के लिए नई स्थितियाँ बनायी हैं। आज कोई कलाकृति जीवन का अभिन्न अंग उस तरह नहीं है जिस तरह कि वह कभी रहा करती थी। लेकिन शारीरिक रूप से सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग न रह जाने के बावजूद कला या कलाकृति, चाहे वह जहाँ कहीं रची गयी हो – जिस तरह के एकान्त में भी जीवन से कही दूर नहीं होती।1 ऐसे में यह पड़ताल आज और भी जरूरी है कि हमारी समकालीन कला हमसे क्या कहना चाह रही है ? उसमें कौन से अनुभव निहित हैं ? वह किन रचनात्मक, वैचारिक और अवधारणात्मक प्रश्नों से जूझ रही है ? बोध के स्तर पर वह कौनसा बोध वहन कर रही है ? और हमारे अपने सन्दर्भ में आधुनिक बोध के ठीक–ठीक मायने क्या हैं, स्वयं आधुनिकता क्या है ? और हमारा समकालीन या आधुनिक कला आन्दोलन, ऐतिहासिक या रचनात्मक दृष्टि से अपने में कौन से स्त्रोत या रचना कारण लिए हुए है ? हम जानते हैं कि हमारे यहाँ के समकालीन कला आन्दोलन को अभी बहुत लम्बा अरसा नहीं हुआ है लेकिन यह समय इतना कम भी नहीं है कि इस बीच उठी समस्याओं और इस बीच उठे सवालों पर बहस ना हो सकें, और हमारा समकालीन कला आन्दोलन जिन मोड़ों ओर घुमावों से गुज़रा है और गुज़र रहा है उसमें ठीक ही बहसों की गुंजाइश बढ़ी ही है, कम नहीं हुई। आधुनिकता के प्रश्न, परम्परा और आधुनिकता के प्रश्न, देशज दृष्टि के प्रश्न, समाज में कला की ग्रहणशीलता के प्रश्न, कला में अभिव्यक्ति के प्रश्न, कला की प्रासंगिकता के प्रश्न, कला में समय और स्पेस के प्रश्न, कला समीक्षा के प्रश्न – बार बार हमारे सामने खड़े होते हैं।2

आज के युवा कलाकारों को इन प्रश्नों को जानने के साथ –साथ इनके बारे में सोचने की भी परम आवश्यकता है। ताकि आधुनिक कला को और अधिक गहराई से समझा जा सके ताकि उसकी जड़ें अधिक मजबूत, गहरी और प्राण संचरण वाली हों।

रचनात्मकता के मनोविज्ञान का समय के साथ भी एक खास तरह का रिश्ता अपने समय के साथ, अपने से पहले समय के साथ और आने वाले समय के साथ जुड़ा है। अतीत, परम्परा, वर्तमान, भविष्य, इनकी लगातार उपस्थिति का बोध, या इनमें से किसी एक की अति–उपस्थिति का बोध निर्धारित करता है कि एक कलाकार अपने समय में मनुष्य की स्थिति और उसकी आधुनिकता को अपनी रचनाओं में किस तरह ग्रहण और परिभाषित करता है। मनुष्य की स्थिति को मुख्यतः आत्मवादी और मुख्यतः वस्तुवादी दोनों ही दृष्टियों से देखा और समझा जा सकता है। दोनों को लेकर द्वन्द्वात्मक भी रहता है और समन्वयात्मक भी।3 मेरी समझ में यह भारतीय जीवन मूल्यों की आधार मान्यताओं के पक्ष में जाता है कि हम आज भी, भारतीय तथा विदेशी दोनों प्रकार के चिन्तनों में, रचनात्मक मिजाज को भौतिक की अपेक्षा आत्मिक संदर्भ में बेहतर समझ पाते हैं। यह रचनात्मकता के अर्थ की खोज है : इसका अर्थ भौतिक का अस्वीकार नहीं। औधोगीकरण, तकनीकी प्रगति, वैज्ञानिक प्रगति आदि के साथ भी मोटे तौर पर 'आधुनिक' शब्द जुड़ा हुआ है ।4 इस आधुनिकता को समझने के लिए आज के युवा कलाकारों को केवल कला का ज्ञान ही काफी नहीं है अपितु साहित्य को भी जानना अति आवश्यक है।

साहित्य या कला किसी एक की निधि नहीं है। उस पर सबका अधिकार है और सभी को कला का कार्य करने के लिए प्रेरणा की आवश्यकता है। एक ओर जब साहित्य का यह कर्तव्य है कि वह युवाओं को यह बताये कि पहले क्या हो चुका है, तो उससे अधिक महत्व की बात यह है कि भावी कलाकारों को प्रेरणा दे जिनके ऊपर हमारा भविष्य निर्भर करता है।5 लोगों का ख्याल है कि कला में आनन्द पाना सार्वजनिक नहीं है और इसमें आनन्द उसी को मिल सकता है जो स्वयं कलाकार है या जिसने थोड़ा बहुत कला का अध्ययन किया है। कला में प्रवीणता या उसमें रस पाना एक ईश्वरीय वरदान है, यह कथन और भी सत्य प्रतीत होता है, जब हम देखते है कि आधुनिक समाज में कला को क्या स्थान प्राप्त है। कलाकार जीवन भर रचना का का कार्य करता है, पर अक्सर वह समाज में अपना स्थान नहीं बना पाता, न समाज उसके परिश्रम का मूल्य ही देता है। कला की साधना करना कलाकार के लिए जीवन से लड़ना है। 6 तात्पर्य यह है कि अभी हमारा देश कला के क्षेत्र में सोया हुआ है। कला विहीन जीवन मृत्यु के समान है, ऐसी अवस्था का कारण हम और आप हैं। हमने अभी तक इस ओर ध्यान दिया ही नहीं है। हमने अपने जीवन में गहराई से कला को कोई स्थान नहीं दिया और इसके लिए दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है। आज के साहित्यिकों, आलोचकों तथा विद्वानों ने अगर कला को गहराई से ना लिया तो वह दिन दूर नहीं जब देश पुनः सुप्तावस्था को प्राप्त होने लगेगा। इन सबका कारण यह है कि अभी तक हमने यह भली भाँति अनुभव ही नहीं किया है कि कलाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है? जीवन में कला का कार्य सबसे पहले आता है। जीवन को बनाये रखना, सुन्दरतापूर्वक जीवन निर्वाह करना, स्वयं कला का कार्य है और आदि काल से है और अति आधुनिक काल में भी रहेगा।7 आधुनिकता के फेर में केवल भौतिकता को याद रखना और भावों की गहराई को भूल जाना ''आधुनिक कला'' नहीं है।

यह सच है कि भावों के उद्वेग में ही कला की उत्पत्ति होती है, परन्तु भाव से कलाकार पैदा नही होते, कलाकार भाव पैदा करते है। एक भूखे से पूछिए की कला कहाँ है तो वह कहेगा

रोटी में, एक अन्धे से कहिए तो कहेगा अन्धेरे में, राजा कहेगा महलों में, रंक कहेगा झोपड़ी में, राजनीतिज्ञ कहेगा राजनीति में, धार्मिक कहेगा धर्म में, वैज्ञानिक कहेगा विज्ञान में अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की जैसे मनोवृत्ति होगी उसी रूप में वह अपने वातावरण को समझेगा, जिस प्रकार लाल चश्मा लगा देने पर सारी दुनिया लाला दिखती है। यह चश्मा कला का गला धोटता है, सत्य पर परदा डाल देता है। सच्चा कलाकार वही है जो इस चश्में को उतार फेकता है और पैनी आखों से सत्य की ओर देखता है। कलाकार भाव का गुलाम नहीं होता, भाव कलाकार का गुलाम होता है। यह रचना जो चश्में के आधार पर हुई है, कभी सफल तथा सत्य या सुन्दर नहीं कही जा सकती।8 सच्ची कला की रचना तब हो सकती है जब कलाकार कमल की भाँति कीचड़ में रहता है, उससे ही अपनी खुराक लेता है। अर्थात् सच्चा कलाकार वह है जो नीचे रहकर भी उपर को जान ले और उपर होकर भी नीचे को पहचानता हो। वह समदर्शी होता है, वह भावों का गुलाम नहीं होता, भावों को उत्पन्न करता है। अर्थात् ''आधुनिकता'' के नाम पर कुछ भी उकेर देना कला नही अपितु वह ''आधुनिक कलाकार'' कला की जड़ें खोखली करता है और युवा कलाकारों को पथ भ्रमित करता है न कि कला की साधना।

## संदर्भ सूची

आधुनिक समाज में कला और कलाकार, रामचन्द्र शुक्ल, द्वितीय संस्करण 1963, विद्यामन्दिर प्रेस (प्रा) लि. वाराणसी – 1, पृ. सं. 10

रामचन्द्र शुक्ल, कला और समाज – कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, द्वितीय संस्करण 1963, विद्यामन्दिर प्रेस (प्रा) लि. वाराणसी – 1, पृ. सं. 39

प्रयाग शुक्ल, कला समय समाज, ललित कला आकादमी, नई दिल्ली प्रथम संस्करण – 1979 पृ. सं. 49

निर्मल वर्मा, कला की प्रासंगिकता, ललित कला अकादमी, रविन्द्र भवन नई दिल्ली, पृ. सं. 8

विनोद भारद्वाज, आधुनिक भारतीय कला का वातावरण, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1979, पृ. सं. 39

कृष्ण नारायण कक्कड़, चित्रकला की भाषा, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृ. सं. 53

सीताकांत महापात्र, परम्परा और कलाकार, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृ. सं. 22, विपिन कुमार अग्रवाल, कला चेतना और समाज ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृ. सं. 28

कला का सामाजिक अभिप्रायः, अवधेश अमन, समकालीन कला संख्या 14, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली मई 1990, पृ. सं. 15